

प्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांडीचीय समझते हैं;

इसनिये, प्रब्र. ग्रीष्मीयिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के अन्त (ग) द्वारा प्रदान की गई अक्षियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरलीकी प्रधिसूचना सं० 3(44) 84-3-ब्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित व्रम न्यायालय, प्रम्लाला, जो विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से संबंधित ग्रथा सम्बन्धित मामला है—

क्या श्री मनोहर सदाचर्ता की बेदाहों जो समापन न्यायोधित तथा थीज है? यदि नहीं, तो वह जिस राहत का दृक्कार है?

सं० ग्रो० विं० एफ डी/148-87/45775.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० देहली पल्य इन्स्टीट्यूट, एन. ग्राइ. टी., फरीदाबाद के अमिक श्री नवरसीन मार्फत बादा नगर इंदौर, मकान नं० 1/1161, पुराना फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके दाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीष्मीयिक विवाद है;

प्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांडीचीय समझते हैं;

इसनिये, प्रब्र. ग्रीष्मीयिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के अन्त (प) द्वारा प्रदान की गई अक्षियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित उद्योगित प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद के नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री नवरसीन की बेदा समाप्त की गई है या उसने स्वयं जाम से गैर-हाजिर हो कर खियन दोया है? इस विन्दु पर निर्णय के कलस्वरूप वह जिस राहत का दृक्कार है?

सं० ग्रो० विं० एफ डी/148-87/45782.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० यूमिक स्प्रीग (इंडिया) ए. 38 एन. ग्राइ. टी., फरीदाबाद, के अमिक श्री कालीचरण, पुल श्री पन्ना सिंह, मार्फत मकान नं० 2875, देवाहर जा नीमी, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके दाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीष्मीयिक विवाद है;

प्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद जो न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांडीचीय समझते हैं;

इसनिये, प्रब्र. ग्रीष्मीयिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के अन्त (प) द्वारा प्रदान की गई अक्षियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित ग्रीष्मीयिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद के नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री कालीचरण की बेदा समाप्त की गई है या उसने स्वयं जाम से गैर-हाजिर हो कर खियन दोया है? इस विन्दु पर निर्णय के कलस्वरूप वह जिस राहत का दृक्कार है?

सं० ग्रो० विं० एफ डी/174-87/45789.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० सिदाना इन्डोनियरिंग कॉम्प्लीमेंट, फ्लाट नं० 171, सैट्टर 24, फरीदाबाद के अमिक श्री राम दिलालन चौधरी, मकान नं० 627, सैट्टर 25, जाल दहाहुर शास्त्री नगर, सोना रोड, देवाहर तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके दाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीष्मीयिक विवाद है;

प्रौर चूकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद जो न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना चांडीचीय समझते हैं;

इमिशार, प्रब्र. ग्रीष्मीयिक विवाद प्रधिनियम, 1947 जौ धारा 10 जौ उपधारा (1) के अन्त (प) द्वारा प्रदान की गई अक्षियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त प्रधिनियम जौ धारा 7 के प्रधान गठित ग्रीष्मीयिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री राम दिलालन चौधरी की बेदाहों का समाप्त न्यायोधित तथा थीज है? यदि नहीं, तो वह जिस राहत का दृक्कार है?

सं० ग्रो० विं० एफ डी/174-87/45796.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० दिल्ली इन्डोनियरिंग कॉम्प्लीमेंट, फ्लाट नं० एस. एस. ग्राइ. 1के 9-10, एन. ग्राइ. टी., फरीदाबाद के अमिक श्री सुरेश कुमार, पुल श्री सुर्पर अफल मार्फत श्री राम लेवर यूनियन, आकिस एस. एस. ग्राइ. फ्लाट नं० 1के 1-4, एन. ग्राइ. टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके दाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीष्मीयिक विवाद है;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ब) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला या जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री सुरेश कुमार को मेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० घो० वि०/गुडगांव/196-87/45803.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) कार्यकारी अभियन्ता, नालिक हैल्प, नारनील (महेन्द्रगढ़) (2) एस. डी. ओ., पालिक हैल्प डिविजन नं० 1, महेन्द्रगढ़, के श्रमिक श्री सुशील कुमार, पुत्र श्री राव राम चन्द्र, गांव व डा० शोमा, तह० नारनील, जिला महेन्द्रगढ़ तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ब) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री सुशील कुमार की सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठोक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० घो० वि०/एफ थी/147-87/45811.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. हरियाणा पेर मिल्ज, 50/51, एन. आई. टी., फरीदाबाद के श्रमिक श्री इरफान अली मार्फत बाबा नगर हृदगाह, मकान नं० 1/1161, पुराना फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ब) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7-क के अधीन गठित श्रीदोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री इरफान अली की सेवा का समाप्त की गई है या उसने स्वयं काम से गैर-हाजिर होकर लियन खोया है ?

इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं० घो० वि०/रोह/149-87/45313.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. बाबा मस्तनाथ आयुर्वेदिक कालेज, रोहतक, के श्रमिक श्री राजबोर निंद, पुत्र श्री शिव नारायण, गांव पौनगी, डाकबाना रुड़की, जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 9641-1-अम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी अधिसूचना की धारा 7 के अवैत गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे मुर्मद या उससे मम्बन्धित नीचे विवा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास

में इने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रदर्शकों तथा अमिल के दीन या तो विद्यावस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथा सम्बन्धित है:—

क्या श्री राजदीर शिर की सेवा समाप्ति/छठनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं० ध्र०० विं०/एक० श्र००/२३८-८७/४५८२९.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि म० शार्दौ इटरप्रेटिंग मधुरा रोड, फरीदाबाद, के अमिल श्री मंदय कुमार, मार्फत श्री दीपी शिह ब्रेमी, अधिल भारतीय जिसान मजदूर संगठन, सरय भाजा, फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिपित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोगिक विवाद है ;

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीधोगिक विवाद अधिनियम, 1947, जी धारा 10 की उपधारा (1) के अन्त (४) द्वारा प्रदान की गई प्रतितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ७-के अधीन गठित श्रीधोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिलों के दीन या तो विद्यावस्त मामला/मामले हैं ग्रथा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले १ न्यायनिर्णय एवं पंचाट ३ मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री संदय सुमार की सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं० ध्र०० विं०/गृहगांव/१३०-८६/४५९२०.—चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) परिवृत्त श्रावक्त्व, हरियाणा, जैनीगं, (2) महा प्रदर्शक, हरियाणा राज्य परिवृत्त, रियासी, के अमिल श्री राज इमार इन्विट्रुशन, पुद्र श्री ग्रामा राम, मार्फत श्री भीम सिंह यादव, १-सी/४६, एन. आई. टी., फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिपित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीधोगिक विवाद है ,

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीधोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के अन्त (४) द्वारा प्रदान की गई प्रतितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त अधिनियम की धारा ७-के अधीन गठित श्रीधोगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिलों के दीन या तो विद्यावस्त मामला/मामले हैं ग्रथा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट ३ मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री राज इमार इन्विट्रुशन, की सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

सं० ध्र०० विं०/सोनी/१३०-८७/४५९२८.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि म० (1) एम. श्री, कन्कै, एस. सी. श्रो. 1014-15, सैक्टर 22-बी, खण्डीगढ़, (2) दी सोनीपत कोपरेटिव सोसाइटी दीक लि०, सोनीपत, (3) सर्विश, कोहला नॉपरेटिव एप्रीकल्चर कॉट नॉपरेटिव सोसाइटी लि०, कोहला (सोनीपत), के अमिल श्री चन्द्रफूल, पुद्र श्री जयनारायण, विकास नगर, बार्ड न० ५, गंधी न० ३, गोहाना (हरियाणा) तथा उसके प्रबन्धकों के दीन इसमें इसके बाद लिपित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद ?

और चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रीधोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के अन्त (४) द्वारा प्रदान की गई प्रतितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० ९६४-१-अम-२८/३२५७३, दिनांक ६ नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिसूचना की धारा ७ के अधीन गठित अम न्यायालय, रोहतक को विद्यावस्त या उससे सुसंगत या उसमें सम्बन्धित नीचे लिपित मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिल दीन या तो विद्यावस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथा सम्बन्धित है :—

क्या श्री चन्द्रफूल की सेवाओं का समाप्त न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?